कक्षा-11

संधि

प्रस्तुतकर्ता

डॉ. सुनील बहल

निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से पढ़िए-

विद्यालय -विद्या + आलय

देवेन्द्र -देव + इन्द्र

हितोपदेश -हित + उपदेश

अत्यंत -अति + अंत

उपर्युक्त उदाहरणों में दो सार्थक शब्दों के मेल से एक नवीन शब्द बन रहा है। इस संपूर्ण प्रक्रिया में पहले शब्द की अंतिम ध्वनि तथा द्वितीय शब्द की प्रथम ध्वनि का परस्पर मेल हो जाने से ध्वनि में परिवर्तन हो रहा है, और एक नई ध्वनि बन रही है जसे- विद्यालय (विद्या+आलय) में आ, आ ध्वनि मिलकर 'आ' की ध्वनि, देवेन्द्र (देव+इन्द्र) में अ, ई ध्वनि मिलकर 'ए' ध्वनि, हितोपदेश (हित+उपदेश) में अ, उ ध्वनि मिलकर 'ओ' ध्वनि तथा अत्यंत (अति + अंत) में इ, अ ध्वनि मिलकर 'य' ध्वनि बन रही है। यही संधि कहलाती है।

संधि शब्द का शाब्दिक अर्थ है– जोड़ या मेल। व्याकरण में यह मेल दो वर्णों के समीप आ जाने से होता है। भाषा प्रवाह में बोलते समय कभी–कभी ध्वनियाँ इतनी समीप आ जाती हैं कि वे अलग–अलग सुनाई न देकर एक अन्य ध्वनि में परिणत हो जाती हैं। यह बदलाव या परिणति मूल ध्वनियों की संधि का ही परिणाम होता है। अतः संधि की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है–

परिभाषा– दो शब्दों का एक साथ उच्चारण होने के कारण पहले शब्द के अंतिम अक्षर तथा दूसरे शब्द के पहले अक्षर की ध्वनियों के आपसी मेल से इन ध्वनियों क उच्चारण में बदलाव आ जाता है। इस बदलाव के कारण ध्वनि और उसके चिह्न में होने वाले परिवर्तन को भाषा–विज्ञान में संधि कहते हैं।

संधि और संयोग में अन्तर– संधि और संयोग में अन्तर है। संयोग में वर्णों में केवल मेल होता है, उनमें कोई परिवर्तन नहीं हाता। जबकि संधि में दो वर्णों के मेल से उनमें परिवर्तन होता है। जैसे–'कुल' शब्द में चार वर्ण हैं– क्, उ, ल्, अ। इन चारों के संयोग से 'कुल' शब्द का निर्माण हुआ है। यहाँ इन वर्णों के मेल से इनमें कोई अन्तर नहीं आया है। जबकि संधि में वर्णों में परिवर्तन आ जाता है तथा उनका उच्चारण भी बदल जाता है। जैसे– सत्+जन में संधि करने पर 'सज्जन' शब्द बनता है।

संधिच्छेद : संधि द्वारा मिलाए गए दो वर्णों को पुनः पहली अवस्था में लाने को संधिच्छेद करना कहा जाता है। जैसे–

परमार्थ = परम + अर्थ   सदैव = सदा + एव
महोत्सव = महा + उत्सव   प्रत्येक = प्रति + एक

वर्णों में संधि करने पर स्वर,व्यंजन अथवा विसर्ग में बदलाव आ जाता है। अतः संधि तीन प्रकार की होती है–

संधि के भेद

1. स्वर संधि   2. व्यंजन संधि   3. विसर्ग संधि

स्वर संधि

स्वर के बाद स्वर के मेल से उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। जैसे–

हिम + आलय = हिमालय

अ + आ = आ

उपर्युक्त उदाहरण में 'हिम ' के 'म' में 'अ' स्वर निहित है और पर अर्थात बाद में 'आलय' के प्रारम्भ में 'आ' स्वर है। इन दोनों स्वरों अर्थात 'अ' और 'आ' को मिलाने से 'दार्घ आ' हो गया और 'हिम+आलय' में संधि करने पर उसमें परिवर्तन होकर 'हिमालय' शब्द बना।

स्वर संधि के पाँच भेद हैं–

(1) दीर्घ संधि (2) गुण संधि (3) वृद्धि संधि (4) यण् संधि (5) अयादि संधि।

(1) दीर्घ संधि– दीर्घ का अर्थ है– बड़ा। इस संधि में जब दो एक समान वर्ण पास पास आते हैं, तो दोनों मिलकर उसी वर्ण का दीर्घ रूप बन जाते हैं। इसे दीर्घ संधि कहते हैं।

(क) पूर्व स्वर = अ या आ
पर स्वर = अ या आ
आदेश = आ

उदाहरण–

स्व + अधीन = स्वाधीन

अ +अ = आ

इसी प्रकार अन्य उदाहरण होंगे–

अ+अ=आ	योग + अभ्यास = योगाभ्यास
अ+आ=आ	देव +आलय = देवालय
आ+अ=आ	विद्या +अर्थी = विद्यार्थी
आ+आ=आ	दया +आनन्द = दयानन्द

(ख) पूर्व स्वर = इ या ई

पर स्वर = इ या ई

आदेश = ई

उदाहरण–

सती+ईश = सतीश

ई+ई = ई

अन्य उदाहरण–

इ+इ= ई	अति	+	इव	=	अतीव
इ+ई= ई	परि	+	ईक्षा	=	परीक्षा
ई+इ= ई	नारी	+	इच्छा	=	नारीच्छा
ई+ई= ई	सती	+	ईश	=	सतीश

(ग) पूर्व स्वर = उ या ऊ

पर स्वर = उ या ऊ

आदेश = ऊ

उदाहरण–

अनु + उदित = अनूदित

उ + उ = ऊ

अन्य उदाहरण

उ+उ= ऊ	गुरु+उपदेश=गुरूपदेश
उ+ऊ= ऊ	सिंधु+ ऊर्मि= सिंधूर्मि
ऊ+उ= ऊ	वधू+उत्सव=वधूत्सव
ऊ+ऊ= ऊ	सरयू+ऊर्मि=सरयूर्मि

(2) गुण संधि : जब अ या आ के बाद 'इ' या 'ई' आ जाए तो दोनों के स्थान पर 'ए', यदि उ या ऊ आ जाए तो 'ओ' और यदि ऋ आ जाए तो 'अर्' हो जाता है। जैसे–

(क) पूर्व स्वर= अ या आ

पर स्वर = इ या ई

आदेश = ए

उदाहरण–

नर + इन्द्र = नरेन्द्र

अ + इ = ए

अन्य उदाहरण–

अ	+	इ= ए		भारत	+	इन्दु	= भारतेन्दु
अ	+	ई= ए		परम	+	ईश्वर	= परमेश्वर
आ	+	इ= ए		यथा	+	इष्ट	= यथेष्ट
आ	+	ई= ए		रमा	+	ईश	= रमेश

(ख) पूर्व स्वर = अ या आ

पर स्वर = उ या ऊ

आदेश = ओ

उदाहरण–

पर + उपकार = परोपकार

अ + उ = ओ

अन्य उदाहरण–

अ +उ= ओ	लोक+उक्ति = लोकोक्ति
अ +ऊ= ओ	जल+ ऊर्मि = जलोर्मि
आ +उ= ओ	महा+ उत्सव = महोत्सव
आ +ऊ = ओ	यमुना+ ऊर्मि = यमुनोर्मि

(ग) पूर्व स्वर = अ या आ

पर स्वर = ऋ

आदेश = अर्

उदाहरण–

देव + ऋषि = देवर्षि

अ +ऋ = अर्

अन्य उदाहरण–

अ+ऋ = अर्	वसन्त + ऋतु = वसन्तर्तु
आ+ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि

(3) वृद्धि संधि – अ या आ से परे ए या ऐ आ जाएँ तो दोनों को मिला कर 'ऐ' यदि ओ या औ आ जाएँ तो दोनों को मिलाकर 'औ' हो जाता है। जैसे–

(क) पूर्व स्वर = अ या आ

पर स्वर = ए या ऐ

आदेश = ऐ

उदाहरण –

मत +ऐक्य = मतैक्य

अ +ऐ = ऐ

अन्य उदाहरण –

अ+ए = ऐ	लोक+एषणा= लोकैषणा
अ+ऐ = ऐ	परम+ऐश्वर्य= परमैश्वर्य
आ+ए = ऐ	सदा+एव = सदैव

(ख) पूर्व स्वर = अ या आ

पर स्वर = ओ या औ

आदेश = औ

उदाहरण –

दन्त+ओष्ठ = दन्तौष्ठ

अ+ओ = औ

अन्य उदाहरण –

अ+ओ = औ	वन+ औषधि = वनौषधि
आ+ओ = औ	महा+ ओज = महौज
अ+औ = औ	परम+ औदार्य = परमौदार्य
आ+औ = औ	महा+ औषध = महौषध

(4) यण् संधि – इ, ई के बाद कोई भिन्न स्वर हाने पर इ, ई को 'य्','उ', 'ऊ' के बाद कोई भिन्न स्वर होने पर उ, ऊ को 'व्' तथा ऋ के बाद भिन्न स्वर होने पर 'ऋ' को 'र' हो जाता है। जैसे–

अति + आचार = अत्याचार

इ + आ = या (इ को य्+आ = या)

नोट (i) स्वर हीन व्यंजन के प्रयोग के समय आधा या हलन्त चिह्न(्)लगा कर लिखा जाता है जैसा कि उपर्युक्त उदाहरण में 'अति' शब्द के अंतिम भाग 'ति' में 'इ' के हटने से 'अति' शब्द का रूप'अत्' (अत्) रह गया।

(ii) 'अति'शब्द के अंतिम भाग 'ति' में 'इ' स्वर के परे भिन्न स्वर(आ) होने से 'इ' को 'य' हो गया और साथ ही भिन्न स्वर 'आ' की मात्रा 'य' में मिलने से अर्थात य्+ा = या हो गया। इस प्रकार अति+ आचार में संधि होकर अत्याचार शब्द बना।

(iii) हलन्त को सामान्य भाषा में आधा व्यंजन कहा जाता है।

(क) पूर्व स्वर = इ या ई
पर स्वर = इ या ई से भिन्न कोई भी स्वर
आदेश = य् + भिन्न स्वर

उदाहरण

इति + आदि = इत्यादि

इ + आ = या (इ को य् + आ = या)

अन्य उदाहरण

इ+अ= य	अति+अधिक = अत्यधिक
इ+आ= या	अभि+आगत = अभ्यागत
ई+अ= य	देवी+अर्पण = देव्यर्पण
ई+आ= या	देवी+आगम = देव्यागम
इ+उ= यु	उपरि+उक्त = उपर्युक्त
इ+ऊ= यू	नि+ऊन = न्यून
ई+उ= यु	सखी+उचित = सख्युचित
ई+ऊ= यू	नदी+ऊर्मि = नद्यूर्मि
इ+ए= ये	प्रति+एक = प्रत्येक

(ख) पूर्व स्वर = उ या ऊ
पर स्वर = उ या ऊ से भिन्न स्वर
आदेश = व् + भिन्न स्वर

उदाहरण–

सु + आगत = स्वागत

उ + आ = वा (उ को व्+आ= वा)

अन्य उदाहरण–

उ+अ = व	सु +अल्प = स्वल्प
उ+आ = वा	मधु+आलय = मध्वालय
उ+इ = वि	अनु+इति = अन्विति
उ+ए = वे	अनु+एषण = अन्वेषण

(ग) पूर्व स्वर = ऋ
पर स्वर = ऋ से भिन्न स्वर
आदेश = 'र्'+भिन्न स्वर

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

ऋ + अ = र (ऋ को र् + अ = र)

नोट – 'पितृ' शब्द के अंतिम भाग 'तृ' में ऋ स्वर के हटने से 'त्' रह गया। जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि स्वरहीन व्यंजन को प्रयोग के समय आधा या हलन्त चिह्न लगाकर लिखा जाता है।

ऋ को र् + अ = र हो गया। अब त् + र = त्र हो गया। अतः

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति संधि हुई।

अन्य उदाहरण –

ऋ + अ = र	मातृ + अनुमति	= मात्रनुमति
ऋ + आ = रा	पितृ + आज्ञा	= पित्राज्ञा
ऋ + उ = रु	पितृ + उपदेश	= पित्रुपदेश
ऋ + ई = री	मातृ + ईश	= मात्रीश

(5) अयादि संधि :– 'ए' के बाद कोई स्वर हो तो 'ए' के स्थान पर 'अय्', 'ऐ' के बाद कोई स्वर हो तो 'ऐ' के स्थान पर 'आय्', ओ के बाद कोई स्वर हो तो 'ओ' के स्थान पर 'अव्' तथा यदि औ के बाद कोई स्वर हो तो 'औ' के स्थान पर 'आव्' हो जाएगा।

(क) पूर्व स्वर = ए

पर स्वर = ए से भिन्न स्वर

आदेश = अय् + भिन्न स्वर

उदाहरण –

ने + अन = नयन

ए + अ = अय (ए को अय् + अ = अय)

अन्य उदाहरण –

ए + अ = अय   चे + अन = चयन

शे + अन = शयन

(ख) पूर्व स्वर = ऐ

पर स्वर = ऐ से भिन्न स्वर

आदेश = आय् + भिन्न स्वर

उदाहरण –

नै + अक = नायक

ऐ + अ = आय (ऐ को आय् + अ = आय)

अन्य उदाहरण–

ऐ+अ= आय　　गै+अक = गायक

　　　　　　गै+अन = गायन

(ग) पूर्व स्वर =ओ

पर स्वर=ओ से भिन्न स्वर

आदेश = अव्+ भिन्न स्वर

उदाहरण–

पो +अन = पवन

ओ+अ = अव (ओ को अव्+अ = अव)

अन्य उदाहरण–

ओ+अ = अव	भो+अन = भवन
ओ+अ = अव	हो+अन = हवन
ओ+इ= अवि	भो+इष्य=भविष्य

(घ) पूर्व स्वर= औ

पर स्वर=औ से भिन्न स्वर

आदेश= आव्+ भिन्न स्वर

उदाहरण–

पौ + अन = पावन

औ + अ = आव (औ को आव्+अ= आव)

अन्य उदाहरण

औ+अ = आव	पौ+अक=पावक
औ+उ = आवु	भौ+उक=भावुक (औ को आव्+उ = आवु)
औ+इ = अवि	नौ+इक=नाविक(औ को आव् +इ = आवि)

(2) व्यंजन संधि

व्यंजन वर्ण के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आ जाने पर उनमें जो विकार सहित मेल होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। व्यंजन संधि के मुख्य नियम इस प्रकार हैं–

(1) वर्णमाला के वर्ग के पहले अक्षर को तीसरा अक्षर– क् ,च्, ट्, प् से परे यदि किसी भी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह या कोई स्वर हो तो उन्हें अपने वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाएगा। अर्थात क् को ग्, च् को ज्, ट को ड् और प् को ब् हो जाएगा। जैसे–

क् को ग्	दिक्	+ दर्शन	=	दिग्दर्शन
च् को ज्	अच्	+ अंत	=	अजंत
ट् को ड	षट्	+ आनन	=	षडानन
प् को ब	अप्	+ ज	=	अब्ज

(2) वर्णमाला के किसी वर्ग के पहले अक्षर को पाँचवाँ– क्, च्, ट्, त्, प् के बाद म या न हो तो क् को ङ, च को ञ, ट् को ण, त् को न् तथा प् को म् हो जाता है। जैसे–

उदाहरण–

क् को ङ्	वाक्	+ मय	=	वाङ्मय
ट् को ण्	षट्	+ मास	=	षण्मास
त् को न्	जगत्	+ नाथ	=	जगन्नाथ
प् को म्	अप्	+ मय	=	अम्मय

(3) त् के सम्बन्ध में विशेष नियम–

(क) त् के बाद च या छ हो तो त् को च् हो जाता है। जैसे

त् को च् — उत्+चारण= उच्चारण

सत्+चरित्र= सच्चरित्र

(ख) 'त्' के बाद 'ज' या 'झ' हो तो 'त्' को तो 'ज्' हो जाता है। जैसे–

त् को ज् — सत्+जन = सज्जन

उत्+ ज्वल = उज्ज्वल

(ग) 'त्' के बाद 'ल' हो तो त् 'को' 'ल्' हो जाता है। जैसे–

त् को ल् — तत्+लीन = तल्लीन

उत्+लेख = उल्लेख

(घ) 'त्' के बाद 'ड' या 'ढ' हो तो 'त्' को 'ड्' हो जाता है। जैसे–

त् को ड् — उत्+डयन = उड्डयन

(ङ) 'त्' के बाद 'ट' या 'ठ' हो तो 'त्' को 'ट्' हो जाता है। जैसे–

त् को ट् — महत्+टीका = महट्टीका

(च) 'त्' के बाद 'श' हो तो 'त्' को 'च्' तथा 'श' को 'छ्' हो जाता है। जैसे–

'त्' को 'च्' तथा 'श्' को 'छ्' — उत्+श्वास= उच्छ्वास

तत्+शिव = तच्छिव

(छ) 'त्' के बाद 'ह' हो तो त् को 'द्' 'ह' को 'ध' हो जाता है। जैसे–

त् को द् तथा ह को ध — उत्+हार = उद्धार

उत्+हरण = उद्धरण

(ज) 'त्' के बाद कवर्ग, तवर्ग, पवर्ग के तीसरे, चौथे वर्ण अर्थात ग, घ, द, ध, ब, भ तथा य, र, व या कोई स्वर आ जाए तो 'त्' को 'द्' हो जाता है। जैसे

त् को द्   सत्+ उपयोग = सदुपयोग   (त् को द्+उ=दु)
जगत् +ईश = जगदीश   (त् को द्+ई= दी)
भगवत्+भक्ति =भगवद्भक्ति   (त् को द्)

(4) छ् के संबंध में नियम

स्वर के बाद यदि 'छ' व्यंजन आ जाए तो 'छ' से पूर्व 'च' वर्ण लगा दिया जाता है। जैसे–

छ को च्छ   आ+ छादन = आच्छादन   संधि+ छेद = संधिच्छेद
स्व+ छंद = स्वच्छंद   प्र+छन्न = प्रच्छन्न

(5) म् क संबंध में नियम

(i) 'म्' के बाद 'क्' से 'भ्' तक कोई व्यंजन आ जाए तो म् उसी वर्ग के अंतिम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) अथवा अनुस्वार में बदल जाता है। जैसे–

उदाहरण–

सम्+कल्प = संकल्प (म् को अनुस्वार)
या सङ्कल्प (म् को कवर्ग का पाँचवाँ अक्षर ङ्)

अन्य उदाहरण–

सम्+चय = संचय (म् को अनुस्वार)
सञ्चय (म् को कवर्ग का पाँचवाँ अक्षर ञ्)
सम्+ तोष = संतोष (म् को अनुस्वार)
सन्तोष (म् को तवर्ग का पाँचवाँ अक्षर न्)
सम्+पूर्ण = संपूर्ण (म् को अनुस्वार)
सम्पूर्ण (म् को पवर्ग का पाँचवाँ अक्षर म्)
दम्+ड= दंड (म् को अनुस्वार)
दण्ड (म् को टवर्ग का पाँचवाँ अक्षर ण्)

विशेष–एकरूपता की दृष्टि से पंचम अक्षर के स्थान पर अनुस्वार को ही मानक माना गया है।

(ii) म् के बाद स्पर्श व्यंजनों के अतिरिक्त य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन होने पर 'म्' को अनुस्वार ही होता है। जैसे–

सम् + यत = संयत   सम् + रक्षण = संरक्षण
सम् + लग्न = संलग्न   सम् + वेदना = संवेदना
सम् + शय = संशय   सम् + सार = संसार
सम् + हार = संहार

अपवाद–सम्+राट्=सम्राट में यह नियम नहीं लागू होता।

6) न् को ण्

ऋ, र् या ष् के बाद 'न्' के आने पर उसे 'ण्' हो जाता है तथा 'न' के बीच में कोई स्वर या कवर्ग, पवर्ग या अन्तःस्थ आने पर भी ण हो जाता है। जैसे–

ऋ+न = ऋण तृष्+ना = तृष्णा

भूष्+अन = भषण परि+नाम = परिणाम

भर्+अन = भरण

(7) स् को ष्

अ,आ को छोड़कर किसी दूसरे स्वर के बाद में 'स' हो तो 'स' के स्थान पर 'ष' हो जाता है।

नि+ सेध= निषेध अभि+सेक=अभिषेक

सु+सुप्ति= सुषुप्ति सु+समा=सुषमा

वि+सम= विषम

(3) विसर्ग संधि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर जो विकार सहित मेल होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं। विसर्ग संधि के मुख्य नियम इस प्रकार हैं–

(क) विसर्ग को ओ

(i) विसर्ग से पूर्व यदि 'अ' हो और विसर्ग के बाद भी 'अ' हो तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर 'ओ' हो जाता है तथा बाद का 'अ' लुप्त हो जाता है। जैसे–

मनः+अनुकूल=मनोनुकूल

(ii) विसर्ग से पूर्व यदि 'अ' हो और बाद में वर्गों के पहले, तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण या य्, र्, ल्, व् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग को 'ओ' हो जाता है। जैसे–

सरः+ज = सरोज मनः+रंजन = मनोरंजन

यशः+ दा = यशोदा पयः+द = पयोद

मनः+बल = मनोबल मनः+ विज्ञान = मनोविज्ञान

अधः+गति = अधोगति पयः+धर = पयोधर

(ख) विसर्ग का श् – विसर्ग से पूर्व कोई स्वर हो और परे च, छ या श आजाए तो विसर्ग को 'श्'हो जाता है।

निः+चल = निश्चल निः+चय = निश्चय

निः+छल = निश्छल हरिः+चन्द्र = हरिश्चन्द्र

(ग) विसर्ग को स् – विसर्ग के बाद त, थ हो तो विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है। जैसे–

निः+तेज = निस्तेज निः+संतान = निस्संतान

नमः+ ते = नमस्ते दुः + साहस = दुस्साहस

(घ) विसर्ग को ष्– विसर्ग के बाद इ या उ स्वर हो और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ, में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग को 'ष्' हो जाता है। जैसे–

निः + कपट = निष्कपट निः+ फल = निष्फल

निः +काम = निष्काम दुः+ कर = दुष्फल

धनुः+टंकार = धनुष्टंकार धनुः+खण्ड = धनुष्खण्ड

(ङ) विसर्ग को र्–

(i) विसर्ग से पूर्व अ, आ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो तथा परे कोई भी स्वर हो तो विसर्ग को 'र्' हो जाता है और बाद वाला स्वर 'र्' में मिल जाता है।

निः+ आहार= निराहार निः + आधार = निराधार

उपर्युक्त उदाहरण में स्पष्ट है कि विसर्ग से पूर्व 'इ' स्वर है तथा बाद में 'आ' स्वर है। दोनों मिलकर 'र्' हो गए तथा बाद वाला स्वर 'आ' जब 'र्' में मिला तो 'रा' हो गया।

अन्य उदाहरण

निः+आशा = निराशा

दुः+आचार = दुराचार

पुनः+अभिव्यक्ति = पुनरभिव्यक्ति

(ii) विसर्ग से पूर्व अ,आ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और परे वर्ग का तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण या य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग को 'र्' हो जाता है। जैसे–

निः+मल = निर्मल दुः +जन = दुर्जन

निः+धन = निर्धन आशीः+वाद = आशीर्वाद

निः+णय = निर्णय दुः +नीति = दुर्नीति

(च) विसर्ग का लोप–

(i) यदि विसर्ग से परे 'र' आ जाए तो विसर्ग का लोप हो जाता है औरउससे पूर्व स्वर को दीर्घ हो जाता है। जैसे–

नि :+रोग= नीरोग

(विसर्ग के बाद 'र'होने से विसर्ग से पूर्व स्वर 'इ' दीर्घ हो गया है अर्थात 'नि'को 'नी' हो गया।)

अन्य उदाहरण

नि :+रव = नीरव निः+रस = नीरस

निः +रज = नीरज नि :+रद = नीरद

(ii) यदि 'अ' के बाद विसर्ग हो और उसके बाद 'अ' से भिन्न कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है आर फिर पास आए हुए स्वरों में संधि नहीं होती। जैसे

उदाहरण

अतः +एव= अतएव।

हिंदी की संधियाँ

हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनमें संस्कृत नियम लागू नहीं होते। अतः हिंदी में कुछ संधि–नियम विकसित हुए हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है–

(1) शब्द के अंत में अल्पप्राण ध्वनि के आगे 'ह' ध्वनि आ जाए तो अल्पप्राण ध्वनि महाप्राण हो जाती है। जैसे–

अब+ही = अभी   कब+ही = कभी

तब+ही = तभी   सब+ ही = सभी

(2) कुछ शब्द में कभी–कभी संधि होने पर किसी एक ध्वनि का लोप हो जाता है। जैसे–

(i) 'ह' ध्वनि का लोप–

उस+ ही = उसी   किस+ ही = किसी

यह+ ही = यही   वह+ ही = वही

(ii) 'आ' के पश्चात् 'ह' आ जाने पर दोनों ध्वनियों का लोप हो जाता है। जैसे–

कहाँ+ ही = कहीं   यहाँ+ ही= यहीं

वहाँ+ ही= वहीं

(3) समस्त पदों में भी कई बार स्वरों में परिवर्तन होता है। जैसे–

घोड़ा+दौड़ = घुड़दौड़   लोहा+आर = लुहार

पानी +घट= पनघट   काठ+ पुतली = कठपुतली

प्रस्तुतकर्ता

डॉ.सुनील बहल

स्टेट रिसोर्स पर्सन

(हिंदी और पंजाबी)